गणपति की सेवा मंगल मेवा, सेवा से सब विघ्न टरें। तीन लोक तैतिस देवता, द्वार खड़े सब अर्ज करे॥

ऋद्धि-सिदधि दक्षिण वाम विराजे, अरु आनन्द सों चवर करें।
धूप दीप और लिए आरती, भक्त खड़े जयकार करें॥

गुड़ के मोदक भोग लगत है, मुषक वाहन चढ़ा करें।
सौम्यरुप सेवा गणपति की, विध्न भागजा दूर परें॥

भादों मास और शुक्ल चतुर्थी, दिन दोपारा पूर परें । लियो जन्म गणपति प्रभुजी ने, दुर्गा मन आनन्द भरें॥

अदभुत बाजा बजा इन्द्र का, देव वधू जहँ गान करें।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो, नाम सुन््या सब विधघ्न टर्ें॥

आन विधाता बैठे आसन, इन्द्र अप्सरा नृत्य करें। देख वेद ब्रह्माजी जाको, विघ्न विनाशक नाम धरें॥

shreeganeshmantra.com

एकदन्त गजवदन विनायक, त्रिनयन रूप अनूप धरें।
पगथ्थंभा सा उदर पुष्ट है, देख चन्द्रमा हास्य करें॥

दे श्राप श्री चंद्रदेव को, कलाहीन तत्काल करें।
चौदह लोक में फिरे गणपति, तीन भुवन में राज्य करें॥

गणपति की पूजा पहले करनी, काम सभी निर्विघ्न सरें।
श्री प्रताप गणपतीजी को, हाथ जोड स्तुति करें॥
गणपति की सेवा...